बोर्ड नमूना प्रश्न-पत्र
2022-23

सामाजिक विज्ञान - X | **समय : 3 घंटे 15 मिनट** | **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश:

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तरपुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों के आंतरिक खण्ड है उन सभी के प्रश्न के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
6. प्रश्न सं. 23 मानचित्र कार्य से संबंधित है और 4 अंक का है।
7. प्रश्न सं. 21 से 23 तक में आंतरिक विकल्प है।

खण्ड–अ

बहुविकल्पी प्रश्न-

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चयन कर उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

(i) गाँधी इरविन समझौता कब हुआ? [1]

(अ) 5 जनवरी, 1930 (ब) 5 मार्च, 1931
(स) 15 जनवरी, 1931 (द) 5 मार्च, 1930

(ii) 'हिन्द स्वराज' पुस्तक के लेखक कौन हैं? [1]

(अ) जवाहरलाल नेहरू (ब) नेल्सन मंडेला
(स) महात्मा गाँधी (द) भगत सिंह

(iii) विश्वव्यापी आर्थिक मंदी की शुरुआत हुई- [1]

(अ) 1919 (ब) 1929
(स) 1935 (द) 1933

(iv) भारत का पहला लौह एवं इस्पात संयंत्र कहाँ स्थापित हुआ? [1]

(अ) मुम्बई (ब) जमशेदपुर
(स) अहमदाबाद (द) बोकारो

(v) बंगाल गजट पत्रिका का सम्पादन किसने किया? [1]

(अ) वारेन हेस्टिंग्स
(ब) जेम्स आगस्टस हिक्की
(स) राजा राम मोहन राय
(द) गंगाधर भट्टाचार्य

(vi) भारत में कौन-सी दलीय व्यवस्था है? [1]

(अ) बहुदलीय (ब) एक दलीय
(स) गठबंधन (द) दो दलीय

(vii) सामाजिक विभाजन अधिकांशतः आधारित होता है- [1]

(अ) मृत्यु पर (ब) वंश पर
(स) परिवार पर (द) जन्म पर

(viii) कम्युनिस्ट पार्टी की विशेषता है- [1]

(अ) सामाजिक असमानता
(ब) आर्थिक सुधार अपनाती है पर राजनीतिक सत्ता पर एकाधिकार बनाए रखती हैं।
(स) आर्थिक असमानता
(द) राजतन्त्र का समर्थन

(ix) उपभोक्ता शोषण का मूल कारण है- [1]

(अ) बेरोजगारी (ब) अशिक्षा
(स) गरीबी (द) इनमें से कोई नहीं

(x) ग्रामीण क्षेत्रों में कर्ज की आवश्यकता मुख्यतः किसलिए होती है? [1]

(अ) आवास (ब) फसल उद्योगों के लिए
(स) विदेश यात्रा के लिए (द) पारिवारिक आय के लिए

(xi) एल्युमिनियम प्रगलन उद्योग निम्न में से किसे कच्चे माल के रूप में प्रयोग करता है? [1]

(अ) गन्ना (ब) चूना पत्थर
(स) लौह अयस्क (द) बॉक्साइट

(XII) निम्न में से कौन-सी विभिन्न देशों के बीच परस्पर सम्बन्ध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया है? [1]

(अ) निजीकरण (ब) राष्ट्रीयकरण
(स) वैश्वीकरण (द) उदारीकरण

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(i) भारतीय निर्माताओं द्वारा बनाये गये विज्ञापन..... के राष्ट्रवादी संदेश के वाहक बन गये थे। **[1]**

(ii) भारत से विदेशों को भेजे जाने वाले श्रमिक..... नाम से जाने जाते थे। **[1]**

(iii) "धर्म को राजनीति से कभी अलग नहीं किया जा सकता।" ये शब्द ..... ने कहे। **[1]**

(iv) औसत आय को ..... आय भी कहा जाता है। **[1]**

(v) भारत में करेंसी (नोट) ..... जारी करता है। **[1]**

(vi) भारत में प्रतिवर्ष ..... को राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है। **[1]**

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक पंक्ति में दीजिये:

(i) 1880 के दशक में उच्च जाति की नारियों की दयनीय दशा के बारे में लिखने वाली महाराष्ट्र की दो महिलाओं के नाम लिखिए। **[1]**

(ii) "प्रथम विश्व युद्ध पहला आधुनिक औद्योगिक युद्ध था।" कोई एक कारण लिखिए। **[1]**

(iii) आदि औद्योगीकरण से आप क्या समझते हैं? **[1]**

(iv) जूट का क्या उपयोग है? **[1]**

(v) आपके अनुसार बाढ़ रोकने का एक उपाय बतायें। **[1]**

(vi) व्यापार किसे कहते हैं? **[1]**

(vii) क्षेत्रीय दल क्या है? **[1]**

(viii) लोकतंत्र के कोई दो लाभ बताइए। **[1]**

(ix) लोकतंत्र की दो चुनौतियाँ लिखिए। **[1]**

(x) सकल घरेलू उत्पाद किसे कहते हैं? **[1]**

(xi) तृतीयक क्षेत्र से आप क्या समझते हैं? **[1]**

(xii) मानव विकास रिपोर्ट किसके द्वारा प्रकाशित की जाती है? **[1]**

खण्ड - ब

लघूत्तरात्मक प्रश्न-प्रश्न सं. 04 से 16 के उत्तर लिखिए (शब्द सीमा 50 शब्द)

4. रूमानीवाद क्या है? **[2]**

5. ब्रेटन वुड्स समझौता क्या है? **[2]**

6. सुभेद्य जातियाँ क्या होती है? कोई दो उदाहरण दीजिए। **[2]**

7. बहुउद्देशीय परियोजनाओं के दो लाभ बताइए। **[2]**

8. रबी और खरीफ फसल किसे कहते हैं? **[2]**

9 स्थानीय व अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अंतर स्पष्ट करें। **[2]**

10. लोकतंत्र में सत्ता की साझेदारी क्यों आवश्यक हैं? **[2]**

11. किस प्रकार सामाजिक अन्तरों से लोकतंत्र सुदृढ़ होता है? **[2]**

12. दबाव समूह और आंदोलन में अन्तर समझाइये। **[2]**

13. आर्थिक विकास क्या है? प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय की परिभाषा लिखो। **[2]**

14. खुली बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी में विभेद कीजिए। **[2]**

15. "मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की आवश्यकता को समाप्त कर देती है।" व्याख्या कीजिये। **[2]**

16. उपभोक्ता अपनी एकजुटता का प्रदर्शन कैसे कर सकते हैं? **[2]**

खण्ड-स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न - प्रश्न 17 से 20 के उत्तर लिखिए। (शब्द सीमा 100 शब्द)

17. उदारवादी राष्ट्रवाद की विशेषताएँ लिखिए। **[3]**

18. संसाधन किसी भी विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कोई तीन तर्क बताइए। **[3]**

19. भारत में 'राजनीति में जाति' और 'जाति के अन्दर राजनीति' है। क्या आप इस कथन से सहमत है? कोई तीन तर्क दीजिए। **[3]**

20. वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं? इसे संभव बनाने वाले कारक बताइए। **[3]**

खण्ड - द

निबन्धात्मक प्रश्न– प्रश्न 21 से 22 के उत्तर लिखिए (शब्द सीमा 250 शब्द)

21. विभिन्न राजनीतिक नेता पृथक् निर्वाचिका के सवाल पर क्यों बँटे हुए थे?

अथवा

शहरों से चलकर असहयोग आंदोलन किस प्रकार देहात में भी फैल गया ? **[4]**

22. संघवाद क्या है? इसकी मुख्य विशेषताओं को समझाइए।

अथवा

स्थानीय शासन व्यवस्था के विभिन्न स्तर कौन-कौन-से हैं? इसके गठन की प्रक्रिया बताइए। **[4]**

23. प्रश्न का उत्तर दिये गये मानचित्र में दीजिए।

दिये गये भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित स्थानों को अंकित कीजिए।

(अ) वडोदरा

(ब) रावतभाटा

(स) तूतीकोरिन

(द) गाँधीनगर **[4]**

अथवा

(अ) ब्यावर

(ब) अमरकंटक

(स) सुंदरगढ़

(द) तुमकूरु

उत्तरमाला – बोर्ड नमूना प्रश्न-पत्र

खण्ड - अ

1.

(i) [ब]
व्याख्या :- गाँधी इरविन समझौता 5 मार्च, 1931 को हुआ।

(ii) [स]
व्याख्या :- 'हिन्द स्वराज' पुस्तक के लेखक महात्मा गाँधी हैं।

(iii) [ब]
व्याख्या :- विश्वव्यापी आर्थिक मंदी की शुरुआत 1929 ई. को हुई।

(iv) [ब]
व्याख्या :- भारत का पहला लौह एवं इस्पात संयंत्र जमशेदपुर में स्थापित हुआ।

(v) [ब]
व्याख्या :- बंगाल गजट पत्रिका का सम्पादन जेम्स आगस्टस हिक्की ने किया।

(vi) [अ]
व्याख्या :- भारत में बहुदलीय व्यवस्था है।

(vii) [द]
व्याख्या:- सामाजिक विभाजन अधिकांशतः जन्म पर आधारित होता है।

(viii) [ब]
व्याख्या :- कम्युनिस्ट पार्टी आर्थिक सुधार अपनाती है पर राजनीतिक सत्ता पर एकाधिकार बनाए रखती हैं।

(ix) [ब]
व्याख्या :- उपभोक्ता शोषण का मूल कारण अशिक्षा है।

(x) [ब]
व्याख्या :- ग्रामीण क्षेत्रों में कर्ज की आवश्यकता मुख्यतः फसल उद्योगों के लिए होती है।

(xi) [द]
व्याख्या :- एल्युमिनियम प्रगलन उद्योग बॉक्साइट को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करता है।

(xii) [स]
व्याख्या :- वैश्वीकरण देशों के बीच परस्पर सम्बन्ध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया है।

2.

(i) स्वदेशी वस्तुओं
(II) गिरमिटिया
(III) महात्मा गाँधी
(iv) प्रति व्यक्ति
(V) भारतीय रिज़र्व बैंक
(VI) 24 दिसम्बर

3.

(i) पंडिता रमाबाई और ताराबाई शिंदे
(ii) प्रथम विश्वयुद्ध में आधुनिक हथियारों जैसे- मशीनगनों, टैंकों, हवाई जहाजों का बहुत अधिक उपयोग हुआ था।
(iii) फैक्ट्रियों की स्थापना से पूर्व की औद्योगिक अवस्था को आदि औद्योगिकरण कहा जाता है।
(iv) जूट का उपयोग धागे, चटाई, रस्सी, तंतु, बोरियाँ, गलीचे व अन्य दस्तकारी की वस्तुएँ बनाने में किया जाता है।
(v) बाँध बनाकर।
(vi) देशों, राज्यों और लोगों के मध्य वस्तुओं के आदान-प्रदान को व्यापार कहते हैं।
(vii) ऐसा राजनीतिक दल जिसका प्रभाव किसी एक राज्य अथवा क्षेत्र तक सीमित होता है। उसे क्षेत्रीय दल कहते है।
(viii)
(i) लोकतंत्र शासन में जनता की भागीदारी को बढ़ावा देता है।
(ii) लोकतंत्र देश के सभी लोगों के मध्य समानता को बढ़ावा देता है।
(ix)
(i) लोकतंत्र के विस्तार की चुनौती।
(ii) लोकतंत्र को मजबूत करने की चुनौती।
(x) किसी देश के भीतर किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।
(xi) तृतीयक क्षेत्रक के अन्तर्गत वे क्रियाएँ आती हैं जो प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रकों के विकास में सहायक होती हैं। इसे सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं।
(xii) मानव विकास रिपोर्ट का प्रकाशन संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा किया जाता है।

खण्ड - ब

4. रूमानीवाद, एक सांस्कृतिक आंदोलन था जिसका उद्देश्य एक विशेष प्रकार की राष्ट्रीय भावना का विकास करना था। रूमानी कलाकारों और कवियों ने तर्क-वितर्क व विज्ञान के महिमामंडन की आलोचना की तथा उसके स्थान पर भावनाओं, अन्तर्दृष्टि और रहस्यवादी भावनाओं पर बल दिया। उनका यह प्रयास था कि एक साझा सामूहिक विरासत की अनुमति तथा एक साझा सांस्कृतिक अतीत को राष्ट्र का आधार बनाया जाए।

5. जुलाई 1944 में संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित न्यू हैम्पशायर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर सम्मेलन हुआ जिसमें दोनों विश्व युद्धों के मध्य अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को सुनिश्चित करने, औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार को बनाये रखने हेतु संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन में सहमति बनी थी। इसे ही ब्रेटन वुड्स समझौता कहा जाता है। ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना की गई।

6. उत्तरसुभेद्य जातियाँ पौधों और प्राणियों की वे जातियाँ हैं जिनकी संख्या लगातार घट रही है। यदि इनकी संख्या घटने में सहायक परिस्थितियाँ लगातार बनी रहती हैं तो ये संकट ग्रस्त जातियों की श्रेणी में शामिल हो जायेंगी।
उदाहरण- 1. हिमालयन भूरा भालू 2. एशियाई हाथी।

7. **बहुउद्देशीय परियोजनाओं के लाभ-**
बाँधों में एकत्रित जल का प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता है। इसके साथ ही मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जाता है। नौकाओं का संचालन कर पर्यटन व्यापार का विकास किया जाता है। ये परियोजनाएँ जल विद्युत ऊर्जा प्राप्ति का प्रमुख साधन हैं।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

8. **रबी फसल-** ऐसी फसलें जिनको अक्टूबर से दिसम्बर माह के मध्य में बोया जाता है तथा अप्रैल से जून माह के मध्य काट लिया जाता हैं। जैसे- गेहूँ, जौ, चना आदि।
खरीफ फसल- ऐसी फसलें जो मानसून के आगमन पर बोयी जाती है तथा सितंम्बर अक्टूबर माह में काट ली जाती है। जैसे- ज्वार, बाजरा, मूंग आदि।

9. **स्थानीय व्यापार-** जब एक क्षेत्र विशेष, यथा कस्बों व गाँवों के लोगों के मध्य वस्तुओं तथा सेवाओं का आदान-प्रदान होता है तो उसे स्थानीय व्यापार कहते हैं।
अन्तरराष्ट्रीय व्यापार- जब किन्हीं दो देशों के मध्य वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान होता है तो उसे अन्तरराष्ट्रीय व्यापार कहते हैं। अन्तरराष्ट्रीय व्यापार की प्रगति किसी भी देश के आर्थिक विकास का सूचक होती है।

10. **लोकतंत्र में सत्ता की साझेदारी की आवश्यकता-**
लोकतंत्र में सत्ता की साझेदारी से सभी समूह सत्ता में भागीदारी होते है जिससे विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच टकराव की सम्भावना कम हो जाती है, इसलिए राजनैतिक हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता से बचने तथा राजनीतिक व्यवस्था के स्थायित्व हेतु सत्ता की साझेदारी आवश्यक है।

11. लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में सामाजिक विभाजन की राजनीतिक अभिव्यक्ति एक सामान्य बात है। जिसके द्वारा विभिन्न सामाजिक समूह अपनी आवश्यकताओं और परेशानियों को प्रकट कर सरकार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सामाजिक विभाजनों की यह अभिव्यक्ति ऐसे विभाजनों के बीच संतुलन पैदा कर लोकतंत्र मज़बूत करती है।

12. **दबाव समूह और आन्दोलन में अंतर-**
- दबाव समूह जनता की स्वतः स्फूर्त भागीदारी पर निर्भर नहीं होते जबकि आन्दोलन होते हैं।
- दबाव समूहों में संगठन मजबूत होता है जबकि आन्दोलनों में संगठन ढीला-ढाला होता है।
- दबाव समूहों के फैसले आन्दोलनों के फैसलों की तुलना में कम लचीले होते हैं।
- दबाव समूहों में फैसले औपचारिक ढंग से लिये जाते हैं जबकि आन्दोलन में फैसले अनौपचारिक ढंग से लिये जाते हैं।

13. जब किसी भी देश या राज्य की प्रति व्यक्ति आय में एक लम्बी अवधि तक लगातार वृद्धि होती है। तो इस प्रक्रिया को आर्थिक विकास कहा जा सकता है। आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य अर्थ-व्यवस्था के सभी क्षेत्रों में उत्पादकता का ऊँचा स्तर प्राप्त करना होता है।
प्रति व्यक्ति आय- राष्ट्रीय आय को कुल जनसंख्या से भाग देने पर प्राप्त आय को प्रति व्यक्ति आय कहते हैं।
राष्ट्रीय आय- किसी समयावधि में एक अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं में कुल प्रवाह का मौद्रिक में मूल्य राष्ट्रीय आय कहलाता है।

14. **खुली बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी में विभेद-**
खुली बेरोजगारी
जब एक व्यक्ति काम करने के लिए तैयार होता है परन्तु उसे काम नहीं मिलता है तो इसे खुली बेरोजगारी कहा जाता है। इस प्रकार की बेरोजगारी प्राय: देश के औद्योगिक क्षेत्रों में पायी जाती है।
प्रच्छन्न बेरोजगारी
- जब कोई व्यक्ति काम करता है परन्तु यदि उसे इस काम से हटा दिया जाए तो उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् कोई कमी नहीं आती है। इस प्रकार की बेरोजगारी प्राय: कृषि क्षेत्र में पायी जाती है।

15. आवश्यकताओं का दोहरा संयोग वस्तु विनिमय प्रणाली में देखने को मिलता है। वस्तु विनिमय प्रणाली में मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का विनिमय होता है। वस्तु विनिमय प्रणाली में मनुष्य ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ता है जो उसकी अतिरिक्त वस्तु लेकर उसे इच्छित वस्तु दे दे। उदाहरण के लिए, कुम्हार अपने मिट्टी के बर्तन बेचकर अनाज खरीदना चाहता है तो उसे ऐसा व्यक्ति ढूँढ़ना पड़ेगा जो उससे मिट्टी के बर्तन लेकर अनाज दे दे। यह एक कठिन कार्य है। इसकी तुलना में ऐसी अर्थव्यवस्था में जहाँ मुद्रा का प्रयोग होता है, मुद्रा महत्वपूर्ण मध्यवर्ती भूमिका प्रदान करके आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की जरूरत को समाप्त कर देती है।

16. **उपभोक्ता अपनी एकजुटता का प्रदर्शन निम्न प्रकार कर सकते हैं-**
- उपभोक्ता अदालतों में शिकायत दर्ज कराके।
- धोखाधड़ी करने वाली कम्पनियों के विरुद्ध संयुक्त रूप से आवाज उठाकर।
- उपभोक्ता संरक्षण समितियों में भागीदारी करके।
- बेईमान उत्पादकों दुकानदारों, व्यापारियों आदि द्वारा किये जाने वाले अनुचित कार्यों के विरुद्ध प्रदर्शन, प्रचार एवं घेराव करके।
- उपभोक्ता संगठनों का निर्माण करके।

खण्ड-स

17. **उदारवादी राष्ट्रवाद की विशेषताएँ-**
- राजनीतिक रूप से उदारवाद एक ऐसी सरकार पर जोर देता था जो सहमति से बनी हो ।
- यह उदारवाद मत देने और चुने जाने का अधिकार केवल सम्पत्तिवान पुरुषों को ही देता था।
- उदारवादी निजी सम्पत्ति के स्वामित्व को अनिवार्य बना देना चाहते थे ।
- यह निरंकुश शासन और पादरी वर्ग के विशेषाधिकारों की समाप्ति, संविधान तथा संसदीय प्रतिनिधि सरकार का पक्षधर था।
- उदारवाद बाजारों की मुक्ति एवं पूँजी व वस्तुओं के आवागमन पर राज्य द्वारा लगाये गये नियंत्रणों को समाप्त करने के पक्ष में था।

18. हमारे पर्यावरण में उपलब्ध हर वह वस्तु संसाधन कहलाती है जिसका उपयोग हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कर सकते हैं जिसे बनाने के लिए हमारे पास प्रौद्योगिकी है और

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

जिसका इस्तेमाल सांस्कृतिक रूप से मान्य है। संसाधन किसी भी तरह के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसे-

- भूमि, जल, वन, वायु, खनिज आदि संसाधनों के बिना कोई भी राष्ट्र विकास नहीं कर सकता।
- संसाधन प्राकृतिक पर्यावरण जैसे कि वायु, जल, वन और विभिन्न जैव रूपों का निर्माण करते हैं जो कि मानवीय जीवन एवं विकास हेतु आवश्यक है।
- संसाधनों के उपयोग से मनुष्य ने घरों, भवनों, परिवहन एवं संचार के साधनों, उद्योगों आदि का निर्माण किया है।
- संसाधन किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के आधार का निर्माण करते हैं।

19. हाँ हम इस कथन से सहमत हैं कि भारत में 'राजनीति में जाति और जाति के अंदर राजनीति' है, इस कथन के संदर्भ निम्न तर्क दिए जा सकते है-

भारत की 'राजनीतिक में जाति' की भूमिका-

भारतीय राजनीति में जातिवाद का अत्यधिक प्रभाव है। भारत में जब राजनीतिक दल चुनाव के लिए उम्मीदवारों का नाम तय करते हैं तो चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं की जातियों का हिसाब ध्यान में रखते हैं ताकि उन्हें चुनाव जीतने के लिए उस जाति के वोट मिल जाएँ। सरकार का गठन करते समय भी राजनीतिक दल इस बात का ध्यान रखते हैं कि उनमें विभिन्न जातियों के लोगों को उचित स्थान मिले।

भारत में 'जाति के अंदर राजनीति' है-

भारत में जाति के अंदर भी राजनीति पायी जाती है। देश के किसी भी एक संसदीय चुनाव क्षेत्र में किसी एक जाति के लोगों का बहुमत नहीं है इसलिए प्रत्येक पार्टी और उम्मीदवारों को चुनाव जीतने के लिए एक जाति और एक समुदाय से ज्यादा लोगों का भरोसा हासिल करना पड़ता है। कोई भी पार्टी किसी एक जाति के सभी लोगों का वोट हासिल नहीं कर सकती।

20. विभिन्न देशों के मध्य परस्पर सम्बन्ध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण कहलाती है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं का समन्वय किया जाता है जिससे वस्तुओं और सेवाओं, प्रौद्योगिकी, पूँजी और श्रम इत्यादि का प्रवाह हो सके।

वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारक-

यातायात एवं परिवहन में उन्नति- पिछले पचास वर्षों में परिवहन प्रौद्योगिकी में उन्नति के परिणामस्वरूप लम्बी दूरियों तक वस्तुओं की तीव्रतर आपूर्ति से लागत कम आने लगी है। जैसे कंटेनरों द्वारा सामान भेजने से माल जल्दी और कम लागत में पहुँचता है।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में उन्नति- दूरसंचार, कम्प्यूटर और इंटरनेट आदि से विश्व में एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने, सूचनाएँ भेजने में सुविधाओं के परिणामस्वरूप वैश्वीकरण को अत्यधिक सहायता मिली है। जैसे- अमेरिका के पाठकों के लिए प्रकाशित समाचार पत्र की डिजाइनिंग और छपाई कलकत्ता में होने के पश्चात् पत्रिकाएँ वायुमार्ग से अमेरिका जाती हैं। रुपये का भुगतान ई-बैंकिंग के माध्यम से किया जाता है।

खण्ड - द

21. पृथक् निर्वाचन को लेकर भारतीय नेताओं में फूट पड़ गई थी। कांग्रेस पृथक् निर्वाचन के खिलाफ थी, जबकि दलित तथा मुस्लिम इसके पक्ष में थे। पहले अंग्रेजों ने केवल हिन्दू और मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन की बात कही थी तो कांग्रेस ने इसका खुलकर विरोध किया था। मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा था कि मुस्लिम लीग अपनी इस माँग को छोड़ने के लिए तैयार हो जाएगी बशर्ते मुसलमानों को केन्द्रीय सभा में सीटों का आरक्षण दिया जाए तथा मुस्लिम बाहुल्य प्रांतों में मुसलमानों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व दिया जाय।

डॉ. अंबेडकर ने 1930 में दलितों को दमित वर्ग एसोसिएशन में संगठित किया। दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों के सवाल पर दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन में महात्मा गाँधी के साथ उनका काफ़ी विवाद हुआ। जब ब्रिटिश सरकार ने अंबेडकर की माँग मान ली तो गाँधी आमरण अनशन पर बैठ गए। उनका मत था कि दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों की व्यवस्था से समाज में उनके एकीकरण की प्रक्रिया धीमी पड़ जाएगी। आखिरकार अंबेडकर ने गाँधीजी की राय मान ली और सितंबर, 1932 में पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर कर दिए। इससे दमित वर्गों को प्रांतीय एवं केंद्रीय विधायी परिषदों में आरक्षित सीटें मिल गई हालाँकि उनके लिए मतदान सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों में ही होता था।

अथवा

शहरों से बढ़कर असहयोग आंदोलन देहात में भी फैल गया था। युद्ध के बाद देश के विभिन्न भागों में चले किसानों व आदिवासियों के संघर्ष भी इस आंदोलन में शामिल हो गए।

अवध में संन्यासी बाबा रामचंद्र ने किसानों का नेतृत्व किया। इससे पहले वे फिजी में गिरमिटिया मज़दूर के तौर पर काम कर चुके थे। उनका आंदोलन तालुक़दारों और ज़मींदारों के ख़िलाफ था। जो किसानों से भारी-भरकम लगान और तरह-तरह के कर वसूल कर रहे थे। किसानों को बेगार करनी पड़ती थी। पट्टेदार के तौर पर उनके पट्टे निश्चित नहीं होते थे। उन्हें बार-बार पट्टे की जमीन से हटा दिया जाता था ताकि जमीन पर उनका कोई अधिकार स्थापित न हो सके। किसानों की माँग थी कि लगान कम किया जाए, बेगार खत्म हो और दमनकारी ज़मींदारों का सामाजिक बहिष्कार किया जाए। बहुत सारे स्थानों पर ज़मींदारों को नाई- धोबी की सुविधाओं से भी वंचित करने के लिए पंचायतों ने नाई- धोबी बंद का फ़ैसला लिया। जून, 1920 में जवाहर लाल नेहरू ने अवध के गाँवों का दौरा किया, गाँव वालों से बातचीत की और उनकी व्यथा समझने का प्रयास किया। अक्टूबर तक जवाहर लाल नेहरू, बाबा रामचंद्र तथा कुछ अन्य लोगों के नेतृत्व में अवध किसान सभा का गठन कर लिया गया। महीने भर में इस पूरे इलाके के गाँवों में संगठन की 300 से ज़्यादा शाखाएँ बन चुकी थीं। अगले साल जब असहयोग आंदोलन शुरू हुआ तो कांग्रेस ने अवध के किसान संघर्ष को इस आंदोलन में शामिल करने का प्रयास किया 1921 में जब आंदोलन फैला तो तालुक़दारों और व्यापारियों के मकानों पर हमले होने लगे, बाज़ारों में लूटपाट होने लगी और अनाज के गोदामों पर क़ब्ज़ा कर लिया गया। बहुत सारे स्थानों पर स्थानीय

नेता किसानों को समझा रहे थे कि गांधीजी ने ऐलान कर दिया है कि अब कोई लगान नहीं भरेगा और जमीन गरीबों में बाँट दी जाएगी। महात्मा का नाम लेकर लोग अपनी सारी कार्रवाइयों और आकांक्षाओं को सही ठहरा रहे थे।

22. संघवाद एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें सर्वोच्च सत्ता केन्द्रीय प्राधिकरण एवं उसकी विभिन्न आनुषंगिक इकाइयों के बीच बँट जाती है। सामान्यत: संघीय व्यवस्था में दो स्तर पर सरकारें होती हैं। इसमें एक सरकार सम्पूर्ण देश के लिए होती है जिसके जिम्मे राष्ट्रीय महत्व के विषय होते हैं फिर राज्य या प्रान्तों के स्तर की सरकारें होती हैं जो शासन के दैनिक काम-काज को देखती हैं।

संघवाद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- संघीय शासन व्यवस्था का उद्देश्य देश की एकता की सुरक्षा करना एवं उसे बढ़ावा देना है तथा क्षेत्रीय विभिन्नताओं का पूर्ण सम्मान करना है।
- संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता केन्द्रीय प्राधिकरण और उसकी विभिन्न आनुसंगिक इकाइयों के मध्य बँट जाती है।
- सामान्यत: संघीय शासन व्यवस्था में दो स्तर पर सरकारें होती हैं। एक सरकार सम्पूर्ण देश के लिए होती है एवं दूसरी सरकार राज्य स्तर की होती है। भारत में सरकार का तीसरा स्तर स्थानीय स्वशासन भी है।
- संघीय शासन व्यवस्था में अलग-अलग स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती हैं, पर कानून बनाने, कर वसूलने एवं प्रशासन का उनका अपना-अपना अधिकार क्षेत्र होता है। संविधान में सरकार के विभिन्न स्तरों के अधिकार क्षेत्र स्पष्ट रूप से वर्णित होते हैं।
- संविधान के मौलिक प्रावधानों को किसी एक स्तर की सरकार स्वयं अकेले नहीं बदल सकती। ऐसे बदलाव दोनों स्तर की सरकारों-केन्द्र व राज्य की सहमति से ही हो सकते हैं।
- संघीय शासन व्यवस्था में वित्तीय स्वायत्तता निश्चित करने के लिए विभिन्न स्तर की सरकारों के लिए राजस्व के भिन्न-भिन्न स्रोत निर्धारित हैं।
- न्यायालयों को संविधान और विभिन्न स्तर की सरकारों के अधिकारों की व्याख्या करने का अधिकार है। विभिन्न स्तर की सरकारों के मध्य अधिकारों के विवाद की स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय निर्णायक की भूमिका निभाता है।

अथवा

स्थानीय शासन व्यवस्था के स्तर- भारत में ग्रामीण स्तर पर विद्यमान स्थानीय शासन व्यवस्था को पंचायती राज के नाम से जाना जाता है। पंचायती राज व्यवस्था त्रिस्तरीय है-

ग्रामीण स्थानीय शासन व्यवस्था-

- **जिला स्तर पर जिला परिषद-** किसी जिले की समस्त पंचायत समितियों को मिलाकर जिला परिषद का गठन होता है। यह पंचायती राज की सर्वोच्च संस्था है। जिला परिषद के अधिकांश सदस्यों का चुनाव होता है। जिला परिषद के उस जिले से लोकसभा व राज्यसभा के लिए चुने गये सांसद, विधायक तथा जिला स्तर की संस्थाओं के कुछ अधिकारी भी इसके सदस्य होते हैं।
- **खण्ड स्तर पर पंचायत समिति-** कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर पंचायत समिति का गठन होता है। इसे मंडल या प्रखण्ड स्तरीय पंचायत भी कहा जाता है। इसके सदस्यों का चुनाव संबंधित क्षेत्र के सभी पंचायत सदस्य करते है।
- **ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत-** प्रत्येक गाँव या गाँव समूह में एक ग्राम पंचायत होती है। यह एक तरह की परिषद है, जिसमें कई सदस्य और एक अध्यक्ष होता है। सदस्य वार्डों से चुने जाते हैं और उन्हें पंच कहा जाता है। अध्यक्ष को सरपंच कहा जाता है। सरपंच का चुनाव गाँव में रहने वाले सभी वयस्क लोग मतदान के जरिये करते हैं। यह पूरे पंचायत क्षेत्र के लिए फैसला लेने वाली संस्था है। पंचायतों का काम ग्रामसभा की देख-रेख में चलता है। गाँव के सभी मतदाता इसके सदस्य होते हैं। ग्राम पंचायत का बजट पास करने और उसके काम-काज की समीक्षा के लिए ग्रामसभा की साल में कम से कम दो या तीन बार बैठकें करनी होती हैं।

शहरी स्थानीय स्वशासन व्यवस्था-

स्थानीय स्वशासन संस्थाएँ शहरों में भी कार्य करती हैं। शहरों में जनसंख्या के आधार पर नगरपालिका, नगरपरिषद एवं नगर निगम का गठन किया गया है। इन संस्थाओं का काम-काज निर्वाचित प्रतिनिधि करते हैं। नगरपालिका के अध्यक्ष को नगरपालिका अध्यक्ष, नगर परिषद में सभापति एवं नगर निगम में इन्हें महापौर (मेयर) कहा जाता है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

23. प्रश्न का उत्तर दिये गये मानचित्र में दीजिए।

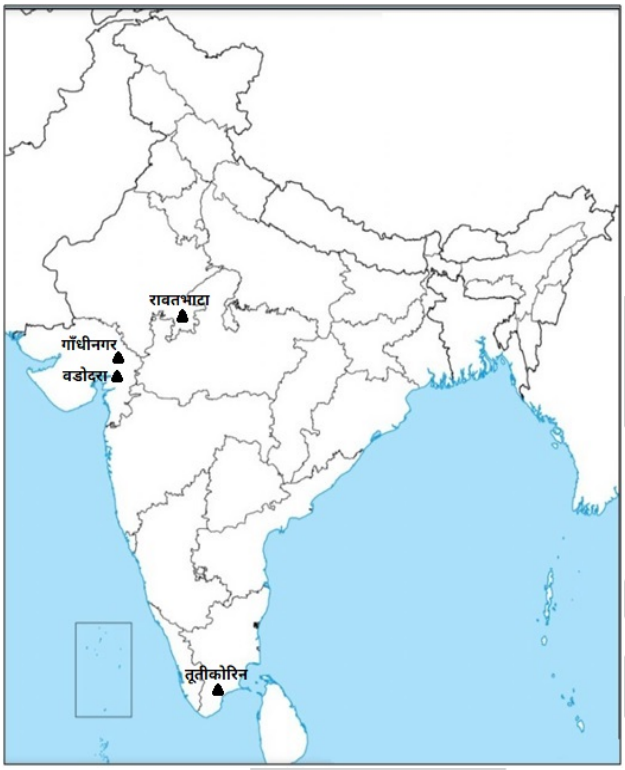

अथवा